1 पर्यटन भूगोल: प्रकृति, विषय-क्षेत्र, परिभाषाएँ, संकल्पना एवं पर्यटन विकास पर प्रभाव

[TOURISM GEOGRAPHY : NATURE, SCOPE, DEFINITIONS, CONCEPT AND EFFECT ON TOURISM DEVELOPMENT]

पर्यटन भूगोल की प्रकृति (Nature of Tourism Geography)

'पर्यटन भूगोल' मानव भूगोल की एक मुख्य शाखा है। जिसमें पृथ्वी की सतह पर प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विविधताओं का अवलोकन सही क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक विधि से ज्ञान वर्धन, वातावरण परिवर्तन, आमोद-प्रमोद एवं स्वास्थ्य लाभ प्राप्त आदि तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। वर्तमान में पर्यटन भूगोल (Tourism Geography) भौतिक विज्ञानों (Physical Sciences) तथा सामाजिक विज्ञानों (Social Sciences) दोनों का समावेश है। पर्यटन भूगोल में भौतिक वातावरण (Physical Environment) तथा सांस्कृतिक वातावरण (Cultural Environment) के तत्त्वों का, उनकी शक्तियों, क्रियाओं तथा प्रभावों का अध्ययन करते हैं। पर्यटन भूगोल दूरियों को कम करने का काम करता है तथा पयर्टन भूगोल की प्रकृति मानवीय ज्ञान की अभिवृद्धि करती है।

'पर्यटन भूगोल' मानव भूगोल की प्राचीनतम शाखा है इसका बोध भूगोलवेत्ताओं को अब हुआ है। दुनिया की अनेक विभिन्नताओं का अध्ययन हम इस भूगोल के माध्यम से करते हैं। इन्हीं विभिन्नताओं का आनन्द लेने के लिए मानव घर से बाहर जाता है। वर्तमान में पर्यटन ने एक उद्योग का रूप ले लिया है। यह पर्यटन भूगोल का व्यवहारिक पक्ष है जो युवा वर्ग के सपनों को साकार करता है। पर्यटन उद्योग विश्व में बहुत तीव्रगति से बढ़ रहा है तथा पर्यटन प्रबन्धन में लोगों की अभिरुचि बढ़ रही है।

'पर्यटन भूगोल' की प्रकृति दार्शनिक तथा प्रत्यक्षवादी है जो प्रादेशिक (Regional) एवं क्रमबद्ध (Systematic) भूगोलों में समाहित है।

पर्यटन की संकल्पना (Concept of Tourism)

'पर्यटन' (Tourism) शब्द अंग्रेजी भाषा के Tour से सम्बन्धित है जो लैटिन भाषा के Tornos शब्द से लिया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ एक पहिएनुमा औजार से है। इसी Tornos शब्द से यात्रा चक्र या यात्रा शब्दों का सृजन हुआ है जो वर्तमान में पर्यटन का मुख्य आधार है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सन् 1643 में करीबन (Kariban) ने विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा, मनोरंजन, भ्रमण तथा विभिन्न देशों या स्थानों की यात्रा के लिए किया था, लेकिन कुछ विद्वानों का मानना है कि Tour एक हिब्रु (Hebrew) भाषा के Torah शब्द से लिया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है अध्ययन या खोज। अत: Tour किसी मात्रा अथवा खोज से सम्बन्धित है। कुछ समय पश्चात् यूरोपीय यात्रियों ने Travellers को Taking व Tour से सम्बन्धित किया है जो वर्तमान में Tourist और Tourism शब्दों में परिवर्तित हो गया। फ्रेंच साहित्य में पर्यटन के लिए ग्राण्ड टुअर (Grand Tour) शब्द प्रयोग में लिए जाता है। इसकी उत्पत्ति Tour शब्द से ही हुई है। जर्मनी, स्विटजरलैण्ड व इटली में भी पर्यटन की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इसी प्रकार की मान्यता है।

सन् 1800 में सेमुयल पेगी (Samuel Pagge) ने यात्री (Traveller) के लिए प्रथम बार पर्यटक (Tourist) शब्द का प्रयोग किया था। वर्तमान में पर्यटन शब्द का प्रयोग एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने वाले पर्यटकों के लिए किया है अत: आज पर्यटन शब्द घूमने-फिरने की क्रियाओं को व्यक्त करता है।

संस्कृत शब्दकोश के अनुसार—पर्यटन 'शब्द' 'अट्' धातु पूर्ण क + परि उपसर्ग के संयोग से 'ल्यूट' प्रत्यय लगाकर व्युत्पन्न हुआ है। इस शब्द का अर्थ है भ्रमण। अर्थात् चहुँदिशि घूमना, परन्तु संस्कृत साहित्य में पर्यटन शब्द को तीन अर्थों में प्रयुक्त किया गया है—

(1) **भ्रमण**—ज्ञान प्राप्ति, मनोरंजन प्राप्ति हेतु बाहर जाना।

(2) **देशाटन**—धनोपार्जन व आर्थिक लाभ के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करना।

(3) **तीर्थाटन**—धार्मिक कृत्यों व धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यात्राएँ करना। प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर पर्यटन का अभिप्राय आर्थिक, धार्मिक, शिक्षा-प्राप्ति, आमोद-प्रमोद, मनोरंजन आदि से सम्बन्धित क्रिया के लिए घर से बाहर की यात्रा करना है।

पर्यटन संकल्पना के कारण (Concept of Tourism factors)—पर्यटन की संकल्पना का आर्विभाव निम्न कारणों से उत्पन्न हुआ है—

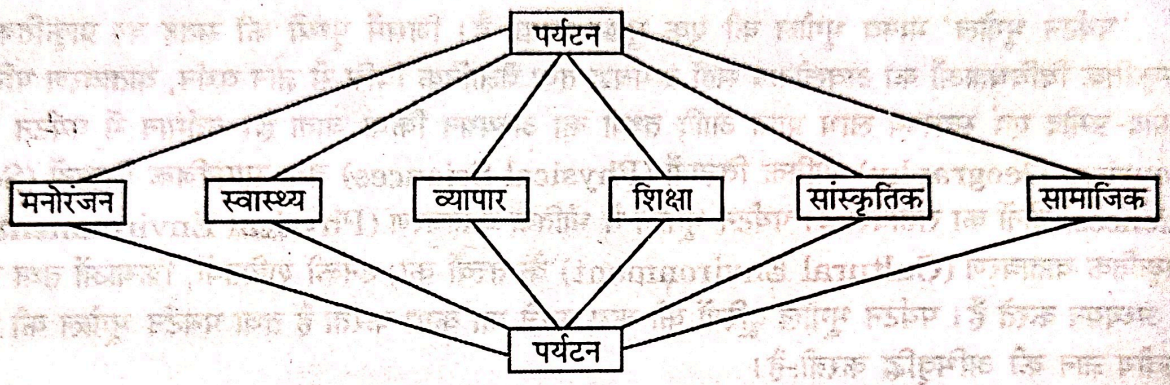

पर्यटन की परिभाषाएँ
(DEFINITIONS OF TOURISM)

पर्यटन को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने तरीकों से परिभाषित करने की कोशिश की है जो निम्न प्रकार हैं—

हुन्जीकर एवं क्राप्फ (Hunziker and Krapf) के अनुसार, "पर्यटन उन समस्त तथ्यों तथा अप्रवासी लोगों के ठहरने तथा भ्रमण करने से उत्पन्न होने वाले सम्बन्धों तथा परिघटना का योग है। जिसमें लोगों का प्रवास स्थायी आवासों में रहन नहीं होता है तथा वे किसी आर्थिक उपार्जन क्रिया से जुड़े नहीं होते हैं।"

Tourism is the sum of phenomena and relationship arising from the travel and stay of non-residents in so far as they do not lead to permanent residence and are not connected with any earning activity.

जिवाडिन जोविएक (Zivadin Joviac) के अनुसार, "पर्यटन एक सामाजिक प्रवाहन है, जो आराम के साथ घरेलू चिन्ता से मुक्त करता है तथा सांस्कृतिक जरूरतों की सन्तुष्टि करने के उद्देश्य से जुड़ा होता है।"

हरमन बी. स्कललोर्ड (Herman V. Schullord) के अनुसार, "पर्यटन उन समस्त क्रियाओं का योग है जो आर्थिक प्रकृति का होता है। यह विदेशियों के देश, तथा प्रदेश के अन्दर एवं बाहर जाने, रुकने तथा प्रवेश से सीधे सम्बन्धित होता है।"

Tourism is defined as the sum total of operations, mainly of an economic nature, which directly relate to the entry, stay and movement of foreigners inside and outside a certain country, city or region.

ब्रिटेन की पर्यटन संस्था (1976) के अनुसार, "पर्यटन एक अस्थाई और लघु अवधि गतिविधि है जिसमें लोग कुछ समय के लिए अपने कार्य-स्थलों, घरों, निवास स्थानों से बाहर निकलकर दूसरी जगह जाते हैं और वहाँ रहते हैं, काम करते हैं। इन स्थानों पर रुकने के दौरान उनकी गतिविधियाँ दिन के आगमन और सैर-सपाटे को भी शामिल किया जाता है।"

इंग्लैण्ड की पर्यटन सोसायटी (1976) **के अनुसार**, "पर्यटन लोगों का किसी बाहरी स्थान पर अस्थायी और अल्प कालिक गमन है जो प्रत्येक गंतव्य स्थान में रुकने के समय पर्यटक सामान्यत: यहाँ रहते हैं और कार्य करते हैं। इसमें समस्त उद्देश्यों के लिए गमन सम्मिलित है।"

अलिस्टर (Alister) **मैथियासन** (Matheison) **तथा जियोफ्रे वाल** (Geoffrey wall) के मतानुसार, "पर्यटन एक बहुरूपीय तथ्य है जो स्थायी मकानों से बाह्य गन्तव्य स्थान को जाने और वहाँ रहने से सम्बन्धित होता है।"

Tourism is a multifaceted phenomenon which involves movement to and stay in destination outside the normal place of residence.

Alest ने सन् 1981 में यह परिभाषा प्रस्तुत की—"घर के माहौल के बाहर होने वाली गतिविधियों को पर्यटन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इन गतिविधियों का चुनाव लोग अपनी रुचि से करेंगे। पर्यटन अपने घर से बाहर रात्रि ठहराव शामिल हो सकता है और नहीं भी।"

Tourism may be defined in term of particular activities selected by choice and undertaken outside the home environment. Tourism may or may not involve over night stays away from home.

के. के. कामरा (K. K. Kamra) एवं **मोहिन्द्र चन्द** (Mohinder chand) के अनुसार, "पर्यटन एक बहु-आयामी, बहु-पक्षीय प्रकृति की गतिविधि है। जिसमें अनेक प्रकार की आर्थिक गतिविधियों का सम्मिश्रण एवं बहुत से व्यक्तियों का जुड़ाव होता है। जिसमें मेजबान अतिथि, व्यापारी, संगठन, स्थान आदि सम्मिलित होते हैं। इन सबकी क्रियाएँ भ्रमण को एक अनुभव कुछ विशेषताओं के साथ प्रदान करती हैं।"

Tourism is a activity of multi-dimensional, Multifaceted nature involving many lives and assorted economic activities. It can be regarded as a whole range of individuals (hosts and guests) business organizations and places (destination) Put togather in some characteristic manner to produce a travel experience.

लीग ऑफ नेशन्स (1937) के अनुसार, "पर्यटन एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति किसी देश में अपने निर्धारित कार्यक्रम के अलावा 24 घण्टे या उससे ज्यादा ठहरता है।"

संयुक्त राष्ट्र के रोम सम्मेलन ने (International Official Union of Tour Operators IOUTO Rome) निम्न प्रकार परिभाषित किया है—"वह व्यक्ति जो अपने देश के पासपोर्ट सहित किसी दूसरे देश का भ्रमण करता है, 24 घण्टे से ज्यादा समय ठहरता है।"

"A person visiting in a country other than his usual residence on a foreign passport, staying at least 24 hours there, a journey with any specific purpose."

भारतीय पर्यटन विभाग (1971) ने विदेशी पर्यटकों को महत्व देते हुए कहा कि "विदेशी पर्यटक वह व्यक्ति है जो भारत में वैध पासपोर्ट सहित 24 घण्टे या अधिक समय के लिए आकर ठहरता है और उसकी यात्रा का कोई एक उद्देश्य को सकता है।"

पर्यटन भूगोल का विषय-क्षेत्र
(SCOPE OF TOURISM GEOGRAPHY)

'पर्यटन भूगोल' (Tourism Geography) भूगोल की एक नवीनतम शाखा है। इसका विषय-क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसको अग्रलिखित तत्त्वों के अन्तर्गत रखा गया है—

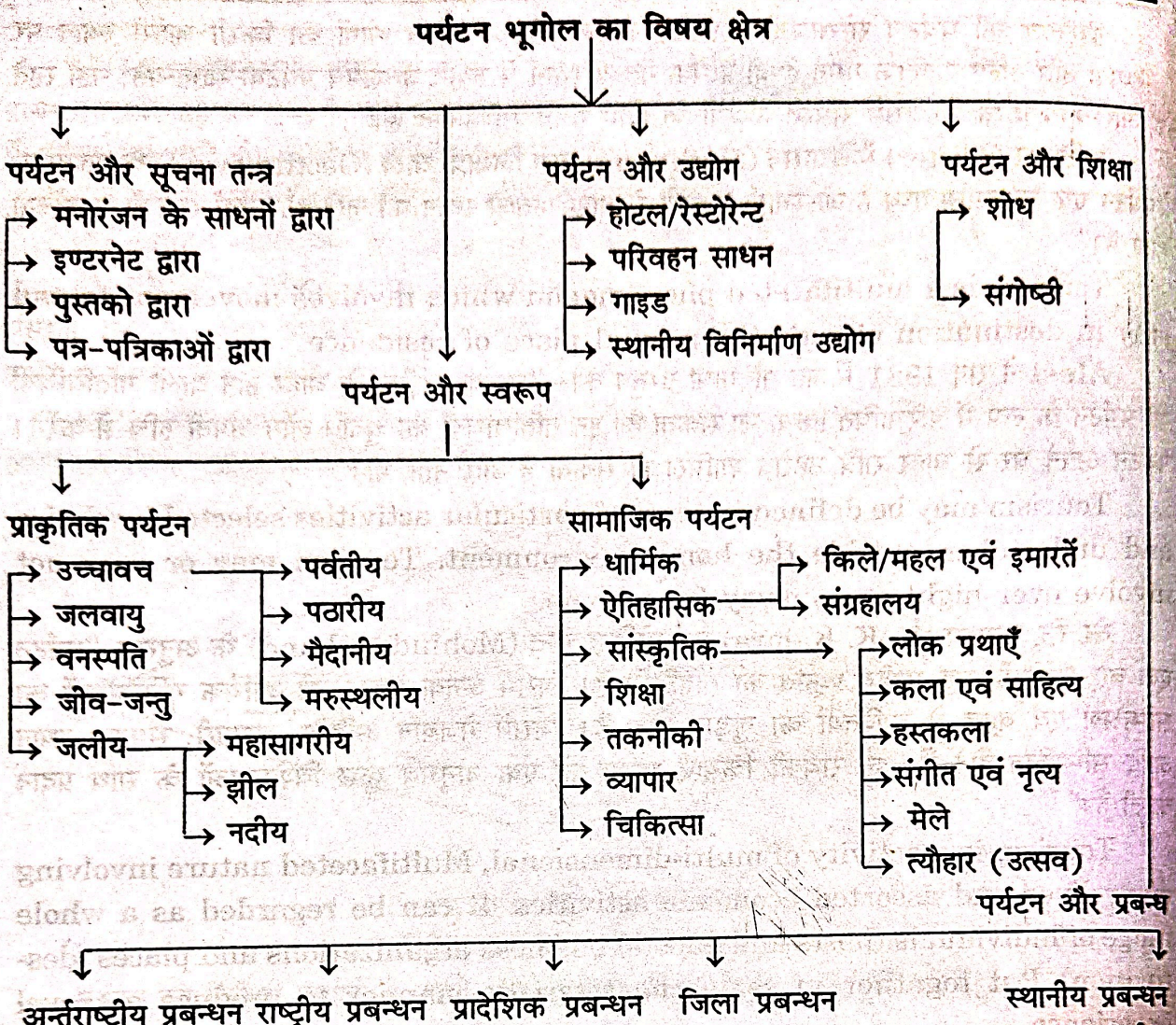

(1) पर्यटन और सूचना तन्त्र (Tourism and Information Technology System)—पर्यटन सूचना तन्त्र के विकास के कारण ही लोग घर बैठे ही विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त कर लेते हैं। इसके कारण लोग विभिन्न प्रकार के पर्यटन स्थलों की ओर आकर्षित होते हैं। इन्हीं के द्वारा विश्व गाँव (Global village) के रूप में उभर कर सामने आया है। पर्यटन को विकसित करने में विभिन्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, समाचार पत्र, चलचित्र, टेलीविजन, पर्यटन मानचित्र, फोटो एलबम, कम्प्यूटर, इन्टरनेट प्रदर्शनियाँ आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इसलिए पर्यटन भूगोल को विकसित करने में सूचना प्रणाली का अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

(2) पर्यटन का स्वरूप (Structure of Tourism)—इसके अन्तर्गत पर्यटन के प्राकृतिक तथा सामाजिक दोनों तत्त्वों को रखा गया है। क्योंकि मानव भ्रमण के लिए प्राकृतिक एवं सामाजिक कारणों से आकर्षित होता है। प्राकृतिक तत्त्वों में उच्चावच, (पर्वत, पठार, मैदान तथा मरुस्थलीय) जलवायु, वनस्पति (उद्यान एवं वन आरक्षित क्षेत्र), जीव-जन्तु (पक्षी बिहार-वन्य जीव अभ्यारण) तथा जलीय (महासागरीय, झीलें, नदियाँ) आदि का अध्ययन पर्यटन भूगोल में करते हैं और सामाजिक तत्त्वों के अन्तर्गत धार्मिक, ऐतिहासिक (ऐतिहासिक स्थल, किला, महल, अन्य इमारतें तथा संग्राहलय) सांस्कृतिक लोक प्रथाएँ, कला एवं साहित्य, हस्तकला, संगीत, नृत्य, मेले तथा त्यौहार (उत्सव) शिक्षा, व्यापार एवं चिकित्सा आदि का अध्ययन पर्यटन भूगोल में करते हैं।

(3) पर्यटन और उद्योग (Tourism and Industry)—यह बात तो निर्विवाद है कि पर्यटन आर्थिक विकास की कुन्जी है। क्योंकि पर्यटकों के आने पर उनके रहने-सहने की व्यवस्था होती है। जिससे होटल एवं रेस्टोरेन्टों का व्यवसाय बहुत वृद्धि कर रहा है। जो विदेश मुद्रा अर्जन का विकसित साधन है। इसके अतिरिक्त इससे परिवहन संसाधनों को बढ़ावा मिला है। पर्यटन में अत्याधुनिक परिवहन साधनों का प्रयोग किया जाता है और एक मोटी रकम अर्जित की जाती है। इसके द्वारा गाइडों के परिवारों का भी लालन-पालन हो रहा है और स्थानीय विर्निमाण लघु उद्योग को भी बढ़ावा मिलता है। जैसे मथुरा-वृन्दावन में कण्ठी माला

निर्माण, पोशाक निर्माण, तस्वीर निर्माण आदि । अतः पर्यटन भूगोल ने एक विकसित उद्योग का रूप धारण कर लिया है। जो पर्यटन भूगोल के अध्ययन का एक हिस्सा है।

(4) **पर्यटन और शिक्षा** (Tourism and Education)—पर्यटन आज शिक्षा का एक मूल विषय बन चुका है। वर्तमान में विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में पर्यटन का अध्ययन भूगोल की एक शाखा के रूप में हो रहा है जो पर्यटन भूगोल के नाम से विकसित है। पर्यटन में लोग आज विभिन्न प्रकार के अनुसंधान अथवा शोध कार्य कर रहे हैं। विश्व के अनेक देशों में पर्यटन विभागों द्वारा एवं संस्थाओं द्वारा संगोष्ठियों का आयोजन भी किया जाता है। वर्तमान में होटल प्रबन्धन एवं केटरिंग संस्थान के स्थापन के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (All India Council of Technical Education) से मान्यता प्राप्त कर शिक्षा प्रदान की जाती है। पर्यटन भूगोल आज एक नवीन विषय के रूप में सामने आया है।

(5) **पर्यटन और प्रबन्धन** (Tourism and Management)—आज पर्यटन की ओर मानव का रुझान बढ़ रहा है। इसलिए पर्यटन प्रबन्धन में लोग अपना भविष्य (कैरियर) बनाने लगे हैं। विश्व के विभिन्न देशों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पर्यटन प्रबन्धन संस्थाओं की स्थापना की गयी है। भारत सरकार ने सन् 1983 में भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन संस्थान (Indian Institute of Tourism and Travel Management) की स्थापना नई दिल्ली में की थी। जिसे 1992 में ग्वालियर में स्थानान्तरित कर दिया गया। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रादेशिक तथा स्थानीय पर्यटन प्रबन्धन कार्यालयों की स्थापना की गयी है। इन सभी का अध्ययन पर्यटन भूगोल में किया जाता है। यह पर्यटन भूगोल के अध्ययन का मुख्य विषय-क्षेत्र है।